कथा सरिता

नकल का फल

चंपानगर गांव में हीरा नाम का एक बहुत ही गरीब व्यक्ति रहता था। गरीबी से तंग आकर वह तपस्या करने बैठ गया। तपस्या में कई अड़चनें आईं लेकिन वह बिल्कुल नहीं डिगा। हीरा की तपस्या से धन के देवता कुबेर प्रसन्न हुए और एक रात उसे दर्शन दिए। उन्होंने कहा, `कल सूर्योदय के समय तुम एक लाठी लेकर दरवाज़े पर खड़े हो जाना। तुम्हारे दरवाज़े पर एक भिक्षुक आयेगा। तुम उसके भिक्षापात्र से लाठी को छुआ देना। वह भिक्षापात्र सोने में बदल जाएगा। फिर तुम उसे रख लेना। ऐसा दस दिन करना। इससे तुम्हारे पास दस सोने के पात्र हो जाएंगे जो तुम्हारी गरीबी दूर करने में सहायक होंगे।' इतना कहने के बाद कुबेर देवता चले गए। दूसरे दिन सूर्योदय से हीरा वह उपाय करने लगा। एक दिन उसके पड़ोसी रतन ने उसे ऐसा करते देख लिया। अगले दिन से वह भी लाठी लेकर भिक्षुक की प्रतीक्षा करने लगा। कई दिनों बाद उसके दरवाज़े पर एक भिक्षुक आया। उसके भिक्षापात्र पर रतन ने लाठी छुआई पर वह सोने में नहीं बदला। यह देख रतन को गुस्सा आ गया। उसने लाठी से भिक्षुक के सिर पर वार कर दिया। सिर पर गहरी चोट लगने से भिक्षुक के प्राण निकल गए। यह सूचना राजा तक पहुंची। राजकर्मचारी उसे गिरफ्तार कर ले गए और राजा के सामने पेश किया। आरोप सिद्ध होने पर उसे मृत्युदंड दिया गया।

लालच की खाई

एक बार चंदन वन में दो हाथी गज्जी और हस्ती कहीं से घूमते हुए वहां आ गए। गज्जी की नज़र एक जगह पड़े हुए केले के गुच्छे की तरफ पड़ी। ताजा-ताजा केले देख गज्जी के मुँह में पानी आ गया। वह उस तरफ जाने लगा तो हस्ती की नज़र भी उस गुच्छे पर चली गई। दोनों के मन में पूरा गुच्छा खाने की लालच आ गया। वे उसी तरफ दौड़ने लगे। तभी गज्जी बोला, `हस्ती भैया, पहले मैंने गुच्छे को देखा है इसलिए इसपर मेरा ही हक है। पूरा मैं ही खाऊंगा। इसे देखकर तो लग रहा है कि दूसरा गुच्छा भी होता तो उसे भी खा जाता।' हस्ती ने उसे सूंड से धक्का देते हुए कहा, `ज़्यादा सयाना मत बन। मैं पूरा खाऊंगा। चल यहां से नौ दो ग्यारह हो जा, नहीं तो मार खाएगा।' हस्ती की बात सुनकर गज्जी को गुस्सा आ गया। वह बोला, `हस्ती, अभी तक तो प्रेम से कह रहा था। अब यहां से भाग जा वरना अच्छा नहीं होगा।' इस तरह दोनों हाथियों में लड़ाई शुरू हो गई। वे सूंड से सूंड और दांत से दांत टकराकर लड़ने लगे। दोनों में से कोई कम नहीं पड़ रहा था। फिर हस्ती ने थोड़ा धकेला तो गज्जी पीछे हो गया। अब तो हस्ती उसे धकेलता और गज्जी पीछे होता रहा। उसकी पार नहीं पड़ रही थी। गज्जी लेकिन हार नहीं मान रहा था। इस तरह दोनों एक-दूसरे से गुत्थम-गुत्था होते हुए एक पहाड़ी पर चढ़ गए। उसके पीछे गहरी खाई थी। गुस्से और लालच में वे नहीं देख पाए कि थोड़ा सा पीछे हटने पर सीधे खाई में गिरेंगे। और यही हुआ। लालच ने दोनों हाथियों की जान ले ली।

योग्य राजा का चुनाव

बहुत समय पहले विराट नगर के राजा चतुर सेन थे। वे हर रोज़ घूमकर प्रजा का हाल जानते रहते थे। इसके लिए वे कई तरह की प्रतियोगिताएं भी करवाते रहते थे। जब वे वृद्ध हो गए तो उन्हें लगा कि अब वे असमर्थ होते जा रहे हैं। एक दिन उन्होंने एक अनोखी प्रतियोगिता के लिए ढिंढ़ोरा पिटवा दिया। उस प्रतियोगिता में भाग लेने वालों में होड़ मच गई। राजकुमार से लेकर आम आदमी उसमें भाग लेने पहुंचा था। राजा ने प्रतियोगिता की शुरुआत राजकुमार से की। उन्होंने एक प्रश्न किया, `ऐसा कौन सा वृक्ष है जिसे लगाने पर सफलता के ऐसे फल मिलें जिन्हें खाकर राज्य का भाग्य ही बदल जाए। चारो ओर खुशहाली हो। प्रजा में कोई भी दुःख नहीं हो।' राजकुमार को इसका कोई उत्तर नहीं सूझा। इसके बाद राजा ने एक-एक कर सभी से वही प्रश्न पूछना शुरु किया लेकिन कोई भी नहीं बता पाया। राजा निराश होने लगे। अंत में दूर गांव से दिखने में साधारण सा एक ग्रामीण युवक आया। उसने कहा, `महाराज, अपने राज्य में सकारात्मक सोच के वृक्ष लगाए जाने चाहिए। उनपर ही सफलता के फल लगेंगे। उन्हें खाकर ही राज्य में प्रगति होगी। प्रजा में सुख-संपन्नता का प्रसार होगा।' यह सुनकर राजा खुश हो गए। उन्होंने युवक को गले लगा लिया। उसी समय उन्होंने उसे राजा बनाने की घोषणा कर दी। वे बोले, `ऐसी सोच रखने वाले युवक के हाथों में राज सौंपकर मैं निश्चिंत हो सकता हूँ।' दूसरे दिन ही युवक को राजा बनाकर वे सन्यास धारण कर वहां से चले गए।

सच्ची कमाई

राजनगर गांव में सुखी नाम का एक जुलाहा रहता था। वह सर्दियों में दुशाले तैयार करके बेचता था। उसी से उसकी आजीविका चलती थी। इस काम से वह बहुत खुश था। सुखी दुशाले बनाने के लिए अच्छी ऊन खरीदता और सच्चे मन से उन्हें बुनता। बुनते समय वह हमेशा भगवान का ध्यान करता और भक्ति के गीत गुनगुनाता रहता। उसके दुशाले में कोई रत्तीभर भी कमी नहीं निकाल सकता था। एक दिन गांव का एक सेठ सुनहरी लाल रंग के उससे दो दुशाले ले गया और दो-तीन दिन बाद पैसे भिजवाने को कह गया। जब पांच दिन निकल गए और सेठ ने पैसे नहीं भिजवाए तो सुखी स्वयं ही चला गया। सेठ लालची था। वह अपना व्यापार भी छल से चलाता था। सुखी को देखकर बोला, `भाई, मेरे घर में जहां दुशाले रखे हुए थे पास में ही मिट्टी का तेल रखा हुआ था। तेल फैल गया इससे वहां आग लग गई और वे जल गए। अब तुम ही बताओ उनके पैसे कैसे दे दूँ।' सुखी बोला, `ऐसा हो ही नहीं सकता। मैं मेहनत और सच्चाई से काम करता हूँ इसलिए दुशालों में आग लग ही नहीं सकती।' उसके कंधे पर एक दुशाला लटका हुआ था। उसने सेठ को दुशाला देते हुए कहा, `इसे तेल में भिगोकर आग लगा दो।' सेठ ने सोचा, `ऐसा करने में क्या हर्ज है।' तब तक वहां भीड़ लग गई थी। सेठ ने सभी के सामने दुशाले को तेल में भिगोया और आग लगा दी। दुशाला जैसा था वैसा ही रहा। उसमें आग लगी ही नहीं। सुखी बोला, `देखा सच को कभी आंच नहीं लगती।' सेठ बहुत शर्मिंदा हुआ। उसने सुखी को दो दुशालों के पैसे निकाल कर दे दिए। उस दिन से सेठ ने भी लोगों से छल-कपट करना छोड़ दिया।

चिरकुण्डा-झारखण्ड। छठपूजा के उपलक्ष्य में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी में ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. बहनें।

झालावाड़। सड़क दुर्घटना में पीड़ित आत्माओं के लिए आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ट्रैफिक इंचार्ज सूरजमल मीणा, हेड कॉन्सटेबल अब्दुल सलीम, कॉन्सटेबल सुरेश मीणा, ब्र.कु. मीना व अन्य।

डिबरूगढ़-असम। आध्यात्मिक क्लास व योग भट्ठी कराने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. आत्मप्रकाश,माउण्ट आबू, ब्र.कु. बिनीता व अन्य।

जम्मू-कटरा। 'अखिल भारतीय किसान सशक्तिकरण अभियान' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. विजय, ब्र.कु. राजिन्दर, डॉ. एस.एस. जामवाल,डायरेक्टर ऑफ एग्रीकल्चर जम्मू प्रोविन्स, जनाब गुलाब नवी लोन हंजुरा,मिनिस्टर फॉर एग्रीकल्चर प्रोडक्शन, ब्र.कु. सरला, ब्र.कु. सुदर्शन, ब्र.कु. किरन, ब्र.कु. रजनी व ब्र.कु. रविन्दर।

कोटा-राज.। राजयोग शिविर का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए मेयर सतीश जी, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. नारायण व अन्य।

उन्नाव-उ.प्र.। 'तनाव मुक्ति से तंदुरूस्ती एवं सफलता के पाँच कदम' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. डॉ. प्रभा मिश्रा, ब्र.कु. डॉ. गिरीश पटेल, शिक्षक विधायक राजबहादुर सिंह चन्देल, नगर अध्यक्ष रामचन्द्र गुप्ता, ब्र.कु. विद्या व ब्र.कु. कुसुम।